❋ उपसंहार ❋

* उपसंहार *

उपसंहार के अंतर्गत समस्त अध्यायों के निचोड़ को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है।

आरंभ में साधुराम दर्शक जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशेषताओं का विवेचना की गई है। उनका जन्म हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के 'बाथु' नामक अत्यंत पिछड़े गाँव में हुआ। बचपन बहुत अभावग्रस्त स्थिति में गुजरा। उनपर उनके दादी माँ का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। बारह साल में शादी हो जाने से एवं परिवार की जिम्मेदारी असमय ही उनके कंधे पर आ जाने से उनके मन पर गहरा असर हुआ। आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं का सामना करते हुए उन्होंने प्राइवेट तौर पर पढ़ना शुरू किया। लेकिन हिंदी, संस्कृत, इतिहास एम.ए. की डिग्री प्राप्त करने की उनकी ज्ञानपिपासा अधूरी रही।

साधुराम दर्शक जी कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील संकोचि वृत्ति के व्यक्ति होने के पश्चात भी संघर्षशील तथा विचारों से मार्क्सवादी रहे। उन्होंने अपने साहित्य में समाज का देखा-सूना भोगा हुआ यथार्थ चित्रित किया हैं। गाँव में हर दिन घटित होनेवाली जोर-जुल्म-शोषण की घटनाएँ बचपन से ही दर्शक जी के मन पर गहरा असर करती रही, यहीं से उनके लेखन की शुरूवात हुई। उनकी कहानियों में गरीबी, बीमारी, अज्ञान, शोषण, अंधविश्वास आर्थिक समस्या एवं सामाजिक राजनीतिक समस्याएँ उद्‌घाटित होती हैं। वर्तमान समाज में फैली हुई व्याधियों से पीड़ित, अपमानित उपेक्षित तथा निम्नवर्गीय लोगों का यथार्थ चित्रण तथा उनके न्यायपूर्ण आक्रोश को समझने तथा रेखांकित करने का सफल प्रयास लेखक ने किया हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास आदि विधाओं में लेखन किया। उनकी अनेक कहानियों को तथा कहानी संग्रह को विविध पुरस्कारों से एवं अनेक सम्मानों से सन्मानित किया गया है।

तात्पर्य वे अपनी आदर्शवाद से युक्त यथार्थवादी कहानियों के माध्यम से उपेक्षित सामान्य तथा निम्नवर्गीय लोगों की यथार्थ जीवनी को चित्रित करते हैं। साथ ही उन्होंने प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा को आगे

बढ़ाने का कार्य सफलता से किया हैं।

'साधुराम दर्शक की कहानियों के कथ्य' की विवेचना करते हुए स्पष्ट होता है कि 'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानी संग्रह की कहानियों में वास्तविक जीवन के फलक पर संवेदना के विभिन्न पहुलओं का अंकन यथार्थवादी दृष्टि से हुआ है। आर्थिक समस्या के कारण इंसान अपने वजूद को मिटा देता है तथा आर्थिक अभाव व्यक्ति को कितना खुदगर्ज और कमीना बना देता इसका मार्मिक चित्रण 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'कंकाल', 'एक पोटली अनाज' आदि कहानियों में मिलता हैं। वर्तमान युग में महिलाओं को जिन कठिन, क्रूर और क्लेशपूर्ण परिस्थितियों से गुजरना पड़ता इसका वास्तववादी अंकन 'ड़ायन', 'चार्ज-शीट', 'पर कटी तितली' आदि कहानियों में हुआ है। 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'पंछी बाबा', 'जिन्दा-मुर्दा' आदि कहानियों में मानवीय संवेदनाओं के साथ साम्प्रदायिक समस्या का उद्‌घाटन किया है। 'एक पोटली अनाज', 'कंकाल हंसता है' आदि कहानियों में पूँजीपतियों से शोषित लोगों की दर्दनाक जिंदगी का चित्रण हुआ है इसके साथ ही जातिय विद्वेष के भयंकर परिणामों की अभिव्यक्ति पाई जाती हैं। 'शाही-खेल' कहानी में पुलिस तथा राजनेताओं की मिली भगत से सामान्य जनता के शोषण का उद्‌घाटन हुआ है। 'मनहूस' कहानी में उपेक्षित इंसान की मनोवैज्ञानिकता दृष्टिगोचर होती है। 'सांपन' कहानी 'माँ' की आंतरिक पीड़ा को उद्‌घाटित करती है।

'एक और सावित्री' कहानी संग्रह में 'एक और सावित्री', 'नये युग की यक्षिणी', 'चन्द्रकिरण' आदि कहानियाँ नारी की श्रद्‌धा, परिश्रम, आत्मनिर्भरता, अर्थनिर्भरता का उद्‌घाटन करती हैं। 'माँ के आँसू' कहानी में बाल-मनोवैज्ञानिकता को अंकित किया है। 'उदास पीला गुलाब' में दहेज के नाम पर ठगे गये शिक्षित महिला का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। 'जिप्सी की तलाश' तथा 'बूचड़खाना' कहानी में बडे-बूड़ों की समस्या का अंकन हुआ है। 'बला', 'बाबा-बरगद' आदि कहानियों में व्यसनाधिनता, खून के रिश्तों में बढ़ती दूरियाँ आदि का चित्रण हुआ है। 'खलनायक ' कहानी मुँह बोले रिश्तों की सार्थकता प्रकट करती है।

'धारा बहती रही' कहानी संग्रह में 'धारा बहती रही', 'अगले अप्रैल में...' आदि कहानियों में युवा पीढ़ी की दुर्बल मनोवृत्ति का चित्रण हुआ हैं। 'दीवारें बोलती हैं', 'कंकाल' आदि कहानियाँ दरिद्रता, गरीबी, अभाव की स्थिति आदि को उजागर करती हैं। 'अतीत', 'कितनी रात और...' कहानियों में सांप्रदायिक परिणामों को दिखाया है। 'असली हकदार' कहानी में मानवीय संवदेना को चित्रित किया है। 'कुटिलजी की देशसेवा' कहानी राजनीति के दाँवपेंच को चित्रित करती है। 'तेल का कनस्तर' कहानी सामान्य आदमी के खालीपन का प्रतीक है। 'ट्राई-साईकिल' कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार की ट्रेजेड़ी को अभिव्यक्त करती है।

अतः हम कह सकते है कि साधुराम दर्शक जी ग्रामीण तथा शहरी जीवन से परिचित है इसलिए उनकी कहानियों में ग्रामीण तथा शहरी परिवेश का यथार्थ अंकन प्राप्त है तथा कथ्य के आधार पर उनकी कहानियाँ सार्थक हैं।

साधुराम दर्शक जी ने अपनी कहानियों में निम्न तथा मध्यवर्ग के परिवार को केंद्र में रखकर दांपत्य तथा दांपत्येत्तर अनेक संबंधों का उद्‌घाटन यथार्थता, संवेदनशीलता तथा सूक्ष्मता स किया हैं।

भारतीय जीवन प्रणाली में 'परिवार संस्था' को महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवार का आधार 'दांपत्य जीवन' है जिसके बलबूते पर मानव जीवन के आयाम बनते-बिगड़ते है। लेखक ने अपनी कहानियों में दांपत्य जीवन के सफल-असफल संबंधों का उद्‌घाटन किया है। साथ ही परिवार के तथा अन्य पारिवारिक बनते-बिगड़ते संबंधों का विवेचन कुशलता से किया है। वर्तमान समाज में अनेक परिवारों में तनाव, संघर्ष पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का अनुकरण दिखाई देता हैं। जिनका चित्रण साधुराम दर्शक की कहानियों में मार्मिकता से हुआ है एवं उनकी कहानियों में चित्रित परिवार का स्वरूप भारतीय आदर्शों के अनुरूप है, साथ ही वह युगीन परिस्थितिजन्य एवं सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से लिप्त हैं।

सफल-असफल दांपत्य जीवन का चित्रण अनेक कहानियों में हुआ है परंतु सफल दांपत्य जीवन की तुलना में असफल दांपत्य जीवन का चित्रण

अधिक हुआ है। एक ओर कहानियों में भारतीय मूल्य एवं संस्कार इनका ऱ्हास दिखाई देता हैं तो दूसरी तरफ मानवता की उँचाई को स्पर्श करती हुई कुछ कहानियाँ दिखाई देती है। सफल दांपत्य जीवन में समझदारी, सेवाभाव तथा पतिपरायण भाव, एक दूसरे के प्रति निष्ठा विश्वास तथा प्रेम में वृध्दि, सन्माननीय भावना का होना आदि का चित्रण 'असली हकदार', 'पिशाच्च-लीला', 'खलनायक', 'एक और सावित्री' आदि कहानियों में हुआ है। असफल बने हुए दांपत्य जीवन में आर्थिक कठिनाई, कुरूपता, अज्ञान, अशिक्षा के कारण पति-पत्नी में दूरियाँ, अलगाव, विघटन की स्थितियाँ निर्माण हुई है। इसका चित्रण 'चन्द्रकिरण', 'पर कटी तितली', 'दीवारें बोलती है', 'सांपन', 'एक वीतरागी के नोट्स' आदि कहानियों में हुआ हैं।

दांपत्येत्तर संबंधों का उद्‌घाटन कई कहानियों में हुआ हैं उसमें पिता-पुत्र के सम-विषम संबंधों का चित्रण हैं। 'जिन्दा-मुर्दा', 'ट्राई-साईकिल', 'डायरी के कुछ पन्ने' आदि कहानियों में पिता-पुत्र में प्रेम, आत्मियता, आदर, तथा अपनापन का चित्रण संवेदनशीलता के साथ हुआ है। 'कुत्ता-जिंदगी', 'एक वीतरागी के नोट्स' कहानियों में पिता-पुत्र के पवित्र संबंधों में आदर, आत्मीयता का अभाव, दूरियाँ, अलगाव दिखाई देता है। पिता-पुत्री के बीच तटस्थता, स्वार्थांधता, जातीयता, परंपरा रीति-रिवाजों के आड़ में एकपिता अपनी बेटी का अनमेल विवाह करते हुए उसकी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहता हैं इसलिए बिना सोचे-समझे बेटी के भविष्य का फैसला करता है जिससे उसका जीवन अंधःकारमय बनता हैं।

माँ-बेटे के स्नेहिल संबंधों का अंकन 'जीवनदीप जलता रहे', 'माँ के आँसू' आदि कहानियों में संवेदनशीलता के साथ हुआ है। 'शाही-खेल' कहानी में माँ-बेटे के विषम, स्नेहहीन संबंध इनका उद्‌घाटन हुआ हैं। 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'खलनायक' आदि कहानियों में स्वार्थी भाईयों का चित्रण हुआ है। 'सास-बहू' के विषम संबंधों का अंकन 'बूचड़खाना' कहानी में हुआ है। 'ससुर-बहू के विषम संबंधों का चित्रण 'जिप्सी की तलाश', 'एक वीतरागी के नोट्स' आदि कहानियों में हुआ हैं। ननंद-भाभी के स्नेहिल संबंधों का

चित्रण 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी में हुआ हैं। दादी-पोता के अटूट स्नेह संबंध 'बूचड़खाना' कहानी में चित्रित हैं।

लेखक ने विशेष रूप से निम्नवर्गीय परिवार तथा पारिवारिक संबंधों के स्नेहिल एवं स्नेहहीन संबंधों का यथार्थ एवं मार्मिकता से चित्रण किया हैं। इन संबंधों के पश्चात उनकी कहानियों में वर्णित पारिवारिक सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया गया है।

'मनुष्य की विषम परिस्थितियों' को समस्या कहा जाता हैं। दर्शक जी ने व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्तर पर जिसमें भारतीय नारी, निम्नवर्ग और उनसे संदर्भित समस्या और समस्याओं द्वारा होनेवाले शोषण, अन्याय-अत्याचार दहेज की समस्या से लेकर वेश्या व्यवसाय की समस्या तक का अंकन प्रस्तुत कहानियों में किया हैं। तथा नारी जीवन की अन्यान्य समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है।

विवाह एक पवित्र बंधन है। इसे आत्मिक तथा शारीरिक मिलन माना है। दुर्भाग्य से वर्तमान युग में विवाह के मूल उद्देश्य एवं संकल्पना पर विविध समस्याओं का ग्रहण लग चुका है जैसे अनमेल विवाह, आंतरजातीय विवाह, पुनर्विवाह, कुप्रथा आदि समस्याएँ। इन्हीं समस्याओं में नारी का ही जीवन पुरूष की अपेक्षा अधिक पीडित एवं दयनीय बना हुआ दिखाई देता है। अनमेल विवाह की समस्या 'खुशी भरा दिन', 'पर कटी तितली' तथा 'खलनायक' आदि कहानियों में दिखाई देता है। आंतरजातीय विवाह की समस्या का अंकन 'धारा बहती रही', 'कंकाल हँसता है' आदि कहानियों में हुआ है। इसमें नारी की विवशता को उद्घाटित किया हैं। कुरूपता के कारण 'चन्द्रकिरण' एवं 'पिशाच्च लीला' कहानी में पुनर्विवाह की समस्या निर्माण हुई है। लड़की के क्रय-विक्रय जैसी कुप्रथा की समस्या 'समय के चरण' कहानी में उद्घाटित हुई है। आर्थिक समस्या पारिवारिक समस्या के मूल में है। 'ड़ायरी के कुछ पन्ने', 'साँपन' आदि कहानियों में निम्न तथा मध्य वर्ग की छोटी-छोटी इच्छाएँ एवं सपनों को पूरा न होने की समस्या दिखाई देती हैं। आवास की समस्या 'एक वीतरागी के नोट्स', 'लगे

रहिए मंगतराम जी', 'दीवारें बोलती हैं' आदि कहानियों में प्रकट होती हैं। सामाजिक समस्या के अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या 'मनहूस' तथा 'जीवन दीप जलता रहें' आदि कहानियों में चित्रित हुई हैं। साम्प्रदायिक समस्या का चित्रण 'पंछी बाबा', 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'अतीत', 'जिन्दा-मुर्दा' आदि कहानियों में हुआ हैं। 'शाही-खेल' कहानी भ्रष्टाचार की समस्या को उद्घाटित करती है। 'पिशाच्च-लीला' तथा 'एक पोटली अनाज' कहानियों में शोषण का यथार्थ अंकन हुआ है। मानो 'जो न देखे रवि वह देखे कवि' इस उक्ति के अनुसार लेखक ने मानव जीवन संबंधी विविध समस्याओं का अंकन सूक्ष्मता से अपने कहानीजगत् में किया हैं।

अतः स्पष्ट होता है कि साधुराम दर्शक जी की कहानियाँ कथ्य-भाव-वातावरण की विशेषताओं के आधार पर जितनी खरी उतरती है उतनी ही शिल्पगत विशेषताओं के आधार पर भी खरी उतरती है। उनकी कहानियों में शिल्प का महत्त्व तथा भाषा साहित्य की पहचान सही रूप में होती है। विवेच्य कहानियों का कथावस्तु-शिल्प मानव जीवन को व्याख्यायित करते हुए विभिन्न पक्षों का चित्रण सक्षमता करता है। प्रस्तुत कहानियों के पात्र सजीव, सप्राण एवं सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले उपेक्षित लोग है। दर्शक जी हिमाचल प्रदेश के होने के कारण 'जीत-हार', 'कंकाल हंसता है', 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'पर कटी तितली' आदि कहानियों में हिमाचल प्रदेश के आस-पास के परिवेश का चित्रण देशकाल-वातावरण के अंतर्गत हुआ है तथा 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'ट्राई-साईकिल', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'ड़ायरी के कुछ पन्ने', 'खलनायक', 'कंकाल' आदि कहानियों में महानगरीय परिवेश दिखाई देता है।

भाषा से मानवीय संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ मुखरित होती हैं। भाषा का प्रयोग पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, भावानुकूल एवं परिवेश अनुकूल हुआ है। संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का सार्थक प्रयोग हुआ है। अतः कहानियों में प्रभावात्मकता, भावों की गहराई, विचारों की सघनता प्रकट करने की क्षमता उन्हें प्राप्त हुई है। भाषा प्रयोग की सक्षमता शैली प्रयोग से भी सिद्ध हुई है आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, दृश्य शैली, पात्रहीन शैली,

पूर्वदीप्ति शैली, वर्णनात्मक शैली आदि शैलियों के सार्थक प्रयोग से कहानियों का कलापक्ष सुंदर बना है। सीधी-सादी भाषा शैली के प्रयोग से कहानी की आत्मा प्रकाशित हुई है। जिस प्रकार अंलकारविहीन सौंदर्य अपने सहज-स्वाभाविक-प्राकृतिक सौंदर्य को निखार देता है वैसे साधुराम दर्शक जी के अभिव्यक्ति पक्ष में भी प्राकृतिक सौंदर्य है, चित्रोपम भाषाशैली ने आम मनुष्य की कहानी को सहज अकृत्रिम सौंदर्य प्रदान किया गया है।

उपर्युक्त शिल्पगत विवेचन के पश्चात् ज्ञात होता है कि दर्शक जी की कहानियों का उद्देश्य मानव तथा मानवीयता का उद्घाटन करना एवं'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का प्रचार तथा प्रसार करना'' यह अप्रत्यक्ष उद्देश्य अनुभव होता है।

निष्कर्षतः यह कहना गलत न होगा कि साधुराम दर्शकजी की विवेच्य कहानियों में शिल्पगत आवश्यकता के आधार पर कलात्मक विशेषताएँ पाई जाती है, भले ही उन्होंने कला की दृष्टि से व्यापक, मार्मिक तथा कलापूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं किए फिर भी उनकी कहानियाँ कलात्मक सफलता और शिल्प सौष्ठव का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

❖ उपलब्धियाँ -

1. यथार्थवादी-प्रगतिशील विचारों के प्रेमचंद जी की सृजनकर्म की परंपरा को बरकरार रखनेवाले साधुराम दर्शक जी के कहानीसाहित्य पर हुआ यह पहला अनुसंधान कार्य मेरे लिए सबसे बड़ी अनुपम उपलब्धि हैं।
2. स्वातंत्र्योत्तर काल के निम्नवर्गीय जीवन का चित्रण सहज एवं स्वाभाविक रूप में हुआ है।
3. कुछ परिवारों में दांपत्य जीवन में साहचर्य और स्नेह दिखाई देता है लेकिन अधिकांश रूप में विषम दांपत्य जीवन चित्रित है।
4. वर्तमान युग में पारिवारिक रिश्ते मुख्य रूप से 'अर्थ' पर निर्भर दिखाई देते है। 'अर्थ' से रिश्तों में दरारे निर्माण होती हैं।

5. बढ़ती मंहगाई, बदलते जीवन मूल्य, स्वार्थ आदि के कारण खून के रिश्तों में दरारे निर्माण होती दिखाई देती हैं।

6. आज भी कई परिवारों में नारी-शोषण, नारी का अपमान, उसका उत्पीड़न, उसपर हुए अन्याय-अत्याचार इनसे नारी जीवन दुःखमय बना हुआ दिखाई देता है। परिवार एवं समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त दयनीय स्थिति से गुजरता हुआ दिखाई देता है।

❖ **अध्ययन की नई दिशाएँ :**

1. साधुराम दर्शक के कथा साहित्य में चित्रित निम्न वर्गीय जीवन
2. साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन
3. साधुराम दर्शक की कहानियों का शैल्पिक अध्ययन
4. साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित नारी जीवन
5. साधुराम दर्शक की समग्र कहानी साहित्य में प्रतिबिंबित समाज जीवन

*****